सौ दिन की कार्ययोजना अपने मंत्रियों को सौंपने वाले शिवराजसिंह चौहान ने नई पारी के लिये शपथ लेने के 40 दिन के अंदर जिस नई सोच को ईजाद किया है, उससे साफ हो जाता है कि उन्होंने बदलाव सिर्फ अपनी कार्यशैली में ही नहीं लाया, बल्कि देश के अन्य राज्यों में मुख्यमंत्रियों की जमात में एक अलग पहचान बनाने की कवायद के चलते वे अपनी व्यक्तिगत छवि में निखार लाने में भी जुट गये हैं. इस कड़ी में मध्यप्रदेश के सभी मंत्रियों की रविवार से पंचमढ़ी में क्लास भी शुरू की गई. जिसमें भारतीय प्रबंधन संस्थान के ख्यात प्रोफेसर मंत्रियों को नेतृत्व के गुण और नई कार्यशैली की अवधारणा से प्रशिक्षित करेंगे. शिवराजसिंह चौहान ने इस प्रशिक्षण शिविर पर कहा है कि ऐसी कक्षाएं हमें आत्म अवलोकन, आत्म विकास और क्षमता बढ़ाने में सहायक होंगी. हमारा सोच और बेहतर काम करने का है. इस दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं. मुख्यमंत्री की यह कोशिश म.प्र. में शिव-राज को सुंदर बनाने की है.

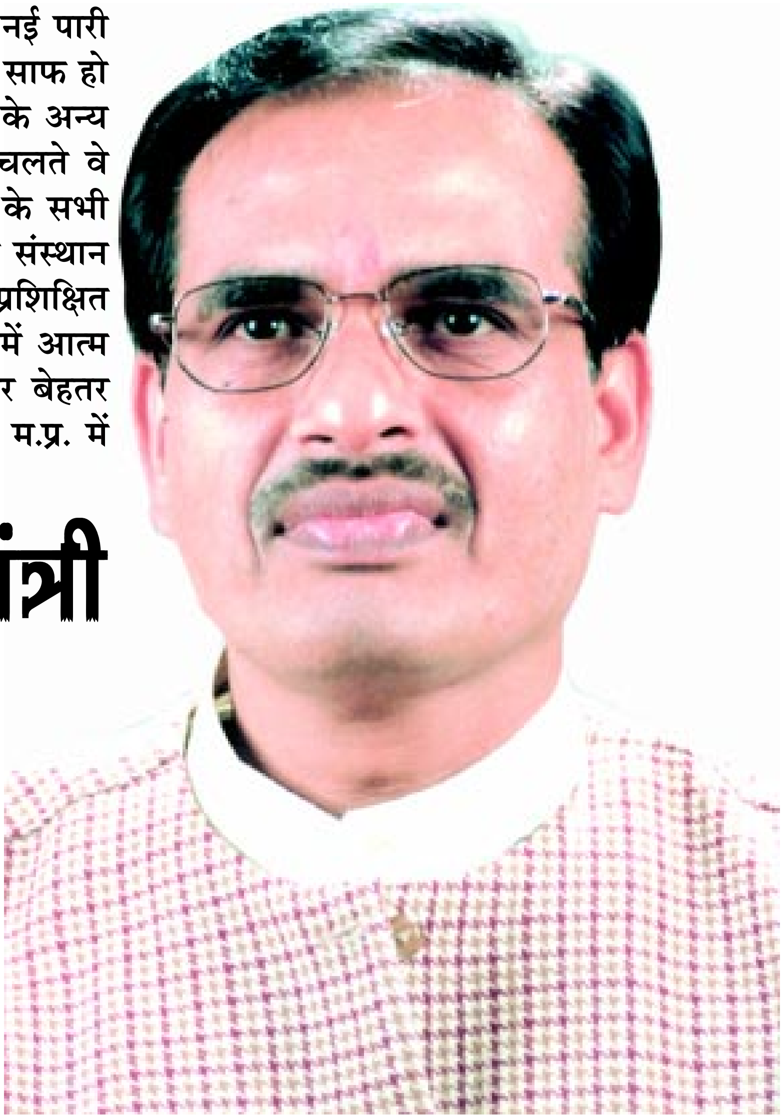

छवि निखारने में जुटे मुख्यमंत्री

सुंदर हो शिव - राज !

पंचमढ़ी में मंत्रियों की दो दिनी क्लास, इस दिशा में एक और कदम

चुनाव के पहले के शिवराज और दूसरी पारी के शिवराज में उनके शुभचिंतक ही नहीं, उनके विरोधी भी बदलाव की बयान आती देखते हैं. बदलाव कार्यशैली, बदलाव सोच, बदलाव प्रशासनिक क्षमता और बदलाव अपने सहयोगी मंत्रियों और कार्यकर्ताओं के प्रति नजरिए में देखा जा सकता है. कोई उन्हें और विनम्र तो कोई उन्हें परिपक्व और घाघ नेता बताता है, जो भाजपा की ही नहीं, प्रदेश की राजनीति की नब्ज को भी बखूबी समझ चुके हैं. भाजपा संगठन के साथ तालमेल बनाना, प्रशासनिक अधिकारियों को टिप्स देना और विकास के मामले में फीडबेक लेने की बात हो या फिर पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व का विश्वास जीतने की कोशिश ही क्यों न हो, शिवराज में इन तीन मोर्चों पर हौले-हौले ही सही कुछ नया दिखाने की झलक दिखाई देने लगी है. मामला चाहे विधायकों को प्रशिक्षण शिविर की आड़ में नई गाइडलाइन देने, मंत्रियों को विकास का एजेंडा थमाकर उनसे निर्धारित समय में परिणाम देने का हो या फिर अधिकारियों को उनकी जवाबदेही सौंपने का, चौहान ने जो कदम आगे बढ़ाए हैं वह उनके स्वर्णिम मध्यप्रदेश की ओर ले जाने के लिये नाकाफी भले ही हो, लेकिन इसे एक सकारात्मक पहल जरूर माना जाएगा. पिछले कार्यकाल में मुख्यमंत्री निवास पर पंचायत लगाकर आम जनता के सुझाव लेने वाले शिवराजसिंह ने बदलते परिदृश्य में आइडियाज फॉर सीएम वेबसाइट लॉन्च कर राज्य के बाहर से भी टिप्स मांगकर जता दिया कि उन्हें समय के साथ चलना आता है.मुख्यमंत्री बनने के बाद शिवराज ने राजधानी भोपाल से लेकर इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर और उज्जैन जैसे बड़े शहरों की यात्रा के दौरान अपने जिन नये अंदाज को रेखांकित किया उसे जनता ने काफी हद तक सराहा तो उनकी अपनी पार्टी कार्यकर्ताओं ने भी अच्छी पहल बताया. चुनाव पूर्व भाजपा कार्यकर्ताओं के महाकुंभ में लालकृष्ण आडवाणी और राजनाथसिंह की मौजूदगी में प्रदेश के विकास के लिये जो सात संकल्प लिये थे उन्हें वे आला अफसरों के सामने रख चुके हैं तो कलेक्टर-कमिश्नर जैसे मैदानी अफसरों के साथ-साथ वे बल्लभ भवन में बैठकर नीतियां बनाने वाले आला अफसरों से इसके बारे में फीडबेक भी ले चुके हैं. यही नहीं, उन्होंने व्यवस्था को परिणाममूलक बनाने के लिये विशेषज्ञों के कार्यदल भी बनवा दिये हैं. शिवराजसिंह चौहान की मौजूदगी में संगठन की बैठक में होर्डिंग-पोस्टर के प्रचार-प्रसार पर रोक लगाने को लेकर बनी सहमति के बाद मुख्यमंत्री ने शासकीय कार्यक्रमों में भी स्वागत की औपचारिकता एक माला से पूरी करने की हिदायत देकर साफ कर दिया है कि स्वागत-सत्कार में फिजूल खर्ची के साथ समय बर्बाद करने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है.

कांग्रेस को बांधने की कोशिशें शुरू

राष्ट्रीय स्तर पर अकेले चुनाव लड़ने की बात कर घटक दलों को राजनीतिक संकेत देने में जुटी कांग्रेस को बांधने की कोशिश भी शुरू हो गई है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी डराकांपा. व कुछ दूसरे दलों में उभरी आवाज के बीच कांग्रेस के सबसे नजदीक रहे राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव ने संप्रग व कांग्रेस प्रमुख से कांग्रेस के नजरिये पर अपनी असहमति जताई. उन्होंने जताया कि संप्रग को न सिर्फ एकजुट होकर लड़ना चाहिए, बल्कि एक-दूसरे को उसकी ताकत के हिसाब से महत्व भी दिया जाना चाहिए। कांग्रेस ने फैसला किया था कि आगामी चुनाव में सप्रग राष्ट्रीय गठबंधन के तौर पर चुनाव में नहीं जाएगा।

नाभि में दोष हो तो बीमारियां जड़ पकड़ लेती हैं

विशेष टिप्पणी
सुरेन्द्र बंसल

लोकसभा के चुनाव निकट हैं ऐसे में आचरण संहिता से चलने वाली पार्टी भाजपा में नई बीमारियों के बहुतेरे लक्षण दिखने लगे हैं. यह बीमारी कहीं महत्वाकांक्षा की है तो कहीं प्रतिस्पर्धा की. कुछ इसे बदले की भावना भी कह सकते हैं.

राजस्थान में वसुंधरा राजे की सिरपटक हार के बाद जो कथ्य भैरोसिंह शेखावत ने तल्ख अंदाज में कहें वे वसुंधरा राजे के राजस्थान में राज के काले अध्याय की तरह बयां करते हैं लेकिन इसकी चुभन दिल्ली तक थी. फिर गुजरात के मुख्यमंत्री और भाजपा के आइकॉन नरेन्द्र मोदी की तरफदारी में उद्योगपति अनिल अंबानी और सुनील मित्तल के बयान भाजपा के शिखर को प्रायोजित तरह से चुनौती देने का व्यवस्थित प्लान था. यूं भी प्रतिस्पर्धाओं के चलते गुजरात की राजनीति गलाकाट रही है. फिर केशुभाई पटेल, शंकरलाल वाघेला या सुरेश मेहता का दौर हो. अब जब नरेन्द्र मोदी ताकत बन गये हैं तो प्रादेशिक चुनौतियां बर्फा गई है. और सिरमौर होते नरेन्द्र मोदी स्वयं अब चुनौती बनकर खड़े हो रहे हैं.

इन घटनाओं का असर प्रदेशों के निचले स्तर पर भी होने लगा है. म.प्र. में ही कुछ सीटों पर गहरी आपत्तियां हैं लेकिन ऐसा पहली बार हुआ है जब सिंगल नाम वाली सीट को खुली चुनौती देकर पार्टी से सीधे तकरार की जा रही है. सुमित्रा महाजन भाजपा की बहुत ही संजीदा नेता हैं और पार्टी के भीतर वे स्वयं कभी किसी के लिये चुनौती नहीं बनी. इंदौर से लगातार छह मर्तबा सांसद बनने के बाद पार्टी के भीतर उनके नाम को लेकर कुछ बवाल चल रहा है तो सीधी बात है बड़े हुए बरगद को कुछ छांटने की कोशिश हो रही है. भाजपा में आखिर यह सब क्यों चल रहा है. दरअसल नाभि में कुछ दोष आ जाए तो बीमारियां अनेक रूप में घर का लेती है. भाजपा की नाभि यानि केन्द्र में अभी बहुत कुछ चल रहा है. प्रधानमंत्री पद के लिये लालकृष्ण आडवाणी की तय उम्मीदवारी तो है, पर इसे शीर्ष में बैठे कितने नेता पचा पा रहे हैं. कितने उनके नाम पर एकमत है और कितने भिन्न मत यह आने वाले समय में पता चलेगा. बहरहाल कैसे कह सकते हैं कि पार्टी अध्यक्ष राजनाथसिंह को लेकर सभी शीर्ष नेता एकमत हैं. क्या, सुषमा स्वराज की भी कुछ हलचल है और क्या अरूण जेटली, वेंकैया, नायडू, यशवंत सिंहा और दूसरे क्रम में अन्य नेता सभी आडवाणी और अध्यक्ष राजनाथ सिंह के साथ हैं ऐसा नहीं लगता. याने भाजपा के केन्द्रीय नाभि में दोष है. जब नाभि कमजोर हो जाती है तो बीमारियां उत्पन्न होने लगती है. फिलवक्त भाजपा में बीमारियां शुरू हो गई. यह जड़ पकड़े उसके पहले इसके इलाज के लिये तो कम से कम भाजपा नेताओं को मानस बनाना ही पड़ेगा.

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८